प्रश्न → खसकुरा भाषा का सम्बन्ध है?
गोरखाली से

उत्तराखण्ड क्षेत्र की भाषा आर्य भाषा, जिसे वैदिककाल में वैदिक भाषा कहा जाता था। वही तत्कालीन लोक भाषा थी। छठी शताब्दी ईसा पूर्व महर्षि पाणिनी ने इस भाषा को व्याकरण के जरिये सूत्रों में आबद्ध कर इसे परिष्कृत किया। यही परिष्कृत भाषा संस्कृत कहलायी। जार्ज ग्रियर्सन ने उत्तराखण्ड की भाषा को 'मध्य पहाड़ी भाषा' नाम से सम्बोधित किया। पहाड़ी बोली को तीन भागों में विभक्त किया गया है

(1) पश्चिमी पहाड़ी – भद्रभाहु से यमुना के पश्चिमी तट तक
(2) मध्य पहाड़ी – मध्य हिमालय अर्थात गढ़वाल-कुमाऊ क्षेत्र
(3) पूर्वी पहाड़ी – नेपाली, खसकुरा या गोरखाली जो नेपाल की देश भाषा है तथा लिपी देवनागरी है।

कुमाउंनी बोली → कुमाउनी भाषा के सम्बन्ध में विद्वानों के दृष्टिकोण

(1) कुमाउनी का विकास दरद, खस, पैशाची व प्राकृत से हुआ है
समर्थक → ग्रियर्सन, सुनीति कुमार चटर्जी तथा डी॰डी॰ शर्मा

(2) कुमाउनी का विकास शौरसैनी उपभ्रंश से हुआ है
समर्थक → नारायणदत्त पालीवाल, उदयनारायण तिवारी, डा॰ धीरेन्द्र वर्मा एवं बद्रीदत्त पांडे

कुमाउनी भाषा शौरसैनी के सर्वाधिक निकट है जिसका मूल आधार संस्कृत है

भाषा वैज्ञानिक डा॰ त्रिलोचन पांडे ने कुमाउनी को चार वर्गों में बाँट कर 12 प्रमुख बोलियाँ निर्धारित की है

A पूर्वी कुमाउंनी वर्ग
(1) कुमय्याँ → नैनीताल से लेकर काली कुमाऊ क्षेत्र
(2) सोर्याली → सोर क्षेत्र (पिथौरागढ़)
(3) सीराली → अस्कोट का सीरा क्षेत्र पिथौ॰
(4) असकोटी → अस्कोट क्षेत्र (पिथौ॰) – इस भाषा पर नेपाली भाषा का प्रभाव है।

UTTARAKHAND EXAM NOTES

B → पश्चिमी कुमाउंनी :

(1) खस पराजिया → अल्मोड़ा के बारामण्डल व दानपुर
(2) पछाई → अल्मोड़ा
(3) फाल्दाकोटी → नैनीताल
(4) चौगर्खिया → काली कुमाऊ क्षेत्र
(5) गंगोई → गंगोलीहाट
(6) दानपुरिया → अल्मोड़ा

C → उत्तरी कुमाउनी क्षेत्र

(1) जौहारी → जौहार व कुंमाउ के सीमावर्ती क्षेत्र। इस भाषा का प्रयोग भोटिया करते है। इस पर तिब्बती भाषा का प्रभाव है

D → दक्षिणी कुमाउनी :

(1) रौ - चौभैंसी → नैनीताल, भीमताल, काठगोदाम हल्द्वानी

कुंमाऊ क्षेत्र की अन्य बोलियां

मंझकुमैया – कुंमाऊ - गढ़वाल सीमा पर बोली जाती है यह गढ़वाली व कुमाउनी का मिलाजुला रुप है

भावरी → चम्पावत के टनकपुर से काशीपुर तक

शौका → पिथौ॰ में शौका

राजी → पिथौ॰ में राजी

बोक्साडी → बोक्सा कुंमाऊ में

पंजाबी, बांगाली → भाबर क्षेत्र में

गढ़वाली बोली : कुंमाउनी भाषा की तरह गढ़वाली भाषा में मतभेद है कुछ इसकी उत्पत्ति दरद या खस से मानते है और कुछ शौरसैनी से

मैक्समूलर ने अपनी पुस्तक 'साइंस आफ लेंग्वेज' में गढ़वाली को प्राकृतिक भाषा का एक रुप माना है। डा॰ ग्रियर्सन गढ़वाली को हिन्दी के निकट मानते है। उन्होने गढ़वाली को आठ भागो में विभक्त किया है।

UTTARAKHAND EXAM NOTES